Title: Reported news item in Hindustan Times dated 20.04.2010 regarding health services and non-availability of potable water in Jharkhand.

श्री निशिकांत दुबे (गोड्डा): महोदया, आज हिन्दुस्तान टाइम्स में एक न्यूज छपी है कि HOT ROD HORROR BRANDS CHILDREN IN JHARKHAND, इसके बारे में मैंने नोटिस दिया है। जिस दिन मैं सांसद बना, मैंने दो जून को शपथ ली और तीन जून को मैंने प्रधानमंत्री जी को पत्र लिखा और कहा कि झारखंड ट्राइबल स्टेट के नाते बनाया गया है। इसके बनाने के पीछे उद्देश्य यह था कि वहां जो गरीब आदमी रहते हैं, खासकर जो ट्राइबल आदमी रहते हैं, शैडयूल कास्ट रहते हैं, उनकी स्थिति बहुत खराब है और बिहार उनके साथ न्याय नहीं कर रहा है। मैंने लिखा कि वहां पीने का पानी नहीं है और स्वास्थ्य की कोई सुविधा नहीं है। एक आदमी की जिन्दगी के लिए कम से कम ये दो बुनियादी चीजों की आवश्यकता होती है। उन्हें पीने का पानी मयस्सर नहीं है और उन्हें स्वास्थ्य सेवा मयस्सर नहीं है। मैं लगातार कम से कम 15-20 चिट्ठी गुलाम नबी आजाद साहब को लिख चुका हूं, प्रधानमंत्री जी को लिख चुका हूं, लेकिन एक रटा-रटाया सा जवाब आया कि यह राज्य सरकार का काम है और इसे राज्य सरकार को करना चाहिए। हम इसके बारे में राज्य सरकार को लिख रहे हैं। मैं आपकी बात से सहमत हूं कि मैं जिन बुनियादी सवालों को उठा रहा हूं, शिक्षा को उठा रहा हूं, स्वास्थ्य को उठा रहा हूं, पीने के पानी की समस्या को उठा रहा हूं या हंगर को उठा रहा हूं कि लोग बेकारी और भूख से मर रहे हैं, वह विषय राज्य सरकार का हो सकता है, लेकिन झारखंड से जो आप कोयला ला रहे हैं, इस देश का 70 परसेंट कोयला झारखंड दे रहा है। इस देश का 60 परसेंट बॉक्साईट झारखंड दे रहा है, इस देश का यूरेनियम झारखंड दे रहा है, इस देश का कॉपर झारखंड दे रहा है। आप वहां से सारा कुछ निकाल रहे हैं। कॉरपोरेट सोशल रेस्पांसबिल्टी के नाम पर उस ट्राइबल के नाम पर आप सारी चीजें राज्य सरकार के ऊपर नहीं छोड़ सकते। यदि आप सारी चीजें राज्य सरकार के ऊपर छोड़ते हैं तो आप रॉयल्टी लेना बंद कर दीजिए। मेरा आपके माध्यम से इस सरकार से आग्रह है कि अभी भी आप चेतिये, वहां पीने के पानी के बिना पूरे झारखंड के लोग, संथाल परगना के लोग, संथाली ट्राइबल पीपुल मर जाएंगे, स्वास्थ्य के बिना मर जाएंगे। वहां एक भी हॉस्पीटल नहीं है। मैंने बार-बार लिखा कि यदि वहां के लोग बीमार होते हैं तो उनके पास बिहार में भागलपुर, पटना या यहां दिल्ली में ऑल इंडिया इंस्टीटयूट आने के अलावा और कोई उपाय नहीं है। कहीं भी एक हॉस्पीटल नहीं है। मेरे डिस्ट्रिक हॉस्पीटल गोड्डा में ऑक्सीजन के बिना लोग मर गये हैं। मैंने बार-बार आपका ध्यान आकृष्ट किया है और यदि आप नहीं चेते तो महोदया, मैं आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि झारखंड किसी दिन यदि नागालैंड हो जाए, झारखंड किसी दिन यदि जम्मू-कश्मीर हो जाये तो इसका दोषी केंद्र होगा और हम और आप जैसे लोग, जो यहां संसद में बैठे होंगे, वे होंगे।

महोदया, मेरा आपके माध्यम से आग्रह है कि केंद्र सरकार को एक नया प्लान बनाना चाहिए। प्लानिंग कमीशन में एक नयी व्यवस्था करनी चाहिए, जिससे वहां के लोगों को पीने का पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और आने-जाने का साधन मिल सके। इन्हीं शब्दों के साथ आपने मुझे बोलने का समय दिया, इसके लिए धन्यवाद।